टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

R

संस्कृत पारंगत (एम.ए.) नियमित

परीक्षा: जानेवारी – २०२३

सत्र ३ रे

विषय: दर्शने –२ (अर्थसंग्रह) (19R3306)

दिनांक: १७/०१/२०२३ **गुण : ६०** **वेळ : स. १०.०० ते १२.३०**

सूचना: १) उजवीकडील अंक त्या प्रश्नांचे गुण दर्शवितात. २) सर्व प्रश्न सोडवणे अनिवार्य.

प्र.१. अधोनिर्दिष्टानां केषाञ्चन चतुर्णां वाक्यानां स्पष्टीकरणं कुरुत। (२०)

१. न च चोदनालक्षणोऽर्थो धर्म इति सौत्रतल्लक्षणविरोधः।

२. सेयं श्रुतिर्लिङ्गादिभ्यः प्रबला।

३. अत एवाङ्गानां क्रमबोधको विधिः प्रयोगविधिः इत्यपि लक्षणम्।

४. मंत्रैरेव स्मर्तव्यमिति नियमविध्याश्रयणात्।

५. प्रमाणान्तरविरोधे सत्यर्थवादो गुणवादः।

६. उभाभ्यामप्यंशाभ्यां भावनैवोच्यते।

प्र.२. अर्थसंग्रहानुसारेण नामधेयविचारं स्पष्टीकुरुत (२०)

अथवा

प्रयोगविधिं सप्रमाणं स्पष्टीकुरुत।

प्र.३. द्वे टिप्पण्यौ लिखत (१४)

१. विनियोगविधेः श्रुतिप्रमाणम्

२. अर्थवादः

३. विशिष्टविधिः

४. परिसंख्या

प्र.४. रिक्तस्थानानि पूरयत। (केषाञ्चन षण्णां वाक्यानाम्) (०६)

१. अप्राप्तस्य प्रापक्ते विधिः ....।

२. निषेधवाक्यस्थले .... एव वाक्यार्थः।

३. .... प्रयोजननवदर्थो धर्मः।

४. यत्र .... सा प्रकृतिः।

५. .... मन्त्राः।

६. कर्माङ्गद्रव्याद्युद्देशेन विधीयमानं कर्म ....।

७. .... सर्वशब्दानां लिङ्गमित्यभिधीयते।

८. कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिः ....।

९. .... हि तन्मात्रसंकोचार्थः।